डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली

साधना एवं सिद्धि
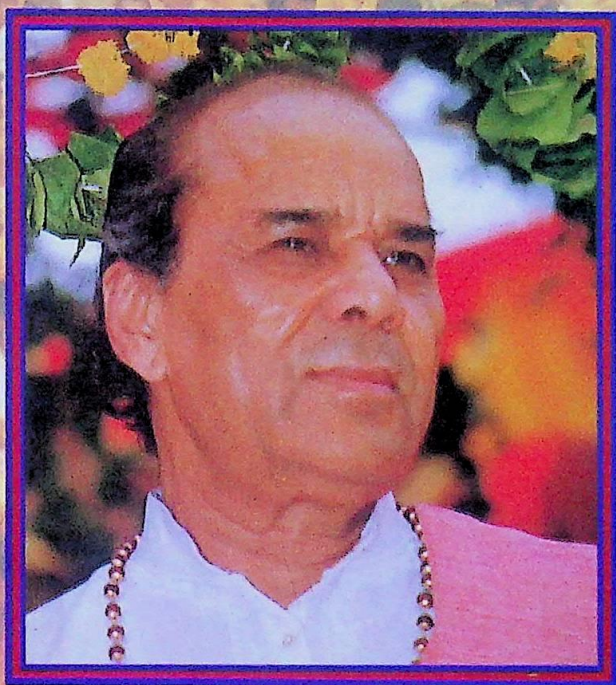
जीवन के अद्वितीय हीरक खण्ड

ज्ञान और चेतना की अनमोल कृतियां

पूज्यपाद गुरुदेव

डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी

द्वारा रचित अनमोल ग्रंथ . . .

ग्रंथ	मूल्य
कुण्डलिनी यात्रा: मूलाधार से सहस्रार तक	150/-
फिर दूर कहीं पायल खनकी	150/-
गुरु गीता	150/-
ज्योतिष और काल निर्णय	150/-
निखिलेश्वरानन्द स्तवन	120/-
हस्तरेखा विज्ञान व पंचांगुली साधना	120/-
निखिल सहस्रनाम	96/-
विश्व की अलौकिक साधनाएं	96/-
ध्यान, धारणा और समाधि	150/-
निखिलेश्वरानन्द शत कम	75/-
अमृत बूंद	60/-
स्वर्ण तंत्रम	60/-
लक्ष्मी प्राप्ति	60/-
निखिलेश्वरानन्द चिन्तन	40/-
सिद्धाश्रम का योगी	40/-
निखिलेश्वरानन्द रहस्य	40/-
आधुनिक हिप्नोटिज्म के 100 स्वर्णिम सूत्र	60/-
प्रत्यक्ष हनुमान सिद्धि	40/-
भैरव साधना	40/-
स्वर्णिम साधना सूत्र	40/-
दैनिक साधना विधि	30/-
झर झर झर अमरत झरै	30/-
तांत्रोक्त गुरु पूजन	30/-
गुरु सूत्र	30/-
मैं बांहे फैलाये खड़ा हूं	20/-
सिद्धाश्रम साधना सिद्धि	20/-
गुरु संध्या	20/-
अप्सरा साधना	20/-
दुर्लभोपनिषद	20/-
बगलामुखी साधना	20/-
धनवर्षिणी तारा	20/-
महाकाली साधना	20/-
शिष्योपनिषद	20/-
भुवनेश्वरी साधना	20/-
दीक्षा संस्कार	20/-
षोडशी त्रिपुर सुन्दरी	20/-
हंसा उड़हु गगन की ओर	20/-
साधना एवं सिद्धि	15/-
गुरु और शिष्य	15/-
नारायण सार	15/-
नारायण तत्व	15/-
गुरुदेव	15/-
सिद्धाश्रम	15/-

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर फोन 0291-432209

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नईदिल्ली फोन:7182248, फैक्स:7196700

साधना एवं सिद्धि

आशीर्वाद

डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली

एस-सीरिज

संकलन एवं सम्पादन
अरविन्द श्रीमाली

प्रकाशक
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर - ३४२ ००१ (राज.)
फोन : 0291-432209, फैक्स : 0291-432010

द्वितीय संस्करण	:	गुरु पूर्णिमा 2002
प्रति	:	5000
मूल्य	:	15 /-
मुद्रक	:	आर. एस. आफसेट प्रिन्टर्स, 487/84, पीरागढ़ी. दिल्ली -28, फोन: 5262040

शब्द ब्रह्म है और वेदों से लेकर आज तक सभी योगियों, ऋषियों, महर्षियों और संतों ने उन्हीं शब्दों का प्रयोग अपने तरीके से किया है, जिन शब्दों का प्रयोग वेदों और उपनिषदों में किया गया है, उन्हीं शब्दों का प्रयोग मीरा, कबीर, तुलसी और रैदास ने भी किया है, क्योंकि शब्द तो शाश्वत हैं।

यदि किसी भी व्यक्ति या महापुरुष के शब्दों और भावों से पुस्तक में वर्णित शब्दों और भावों का साम्य दिखाई दे या अनुभव होने लगे, तो यह एक संयोग है। मैं उन सभी ज्ञात-अज्ञात महापुरुषों के शब्दों का, भावों का और उनके विचारों का ऋणी हूं, क्योंकि उन सभी के साहित्य और भावों का मेरे चित्त पर गहरा असर रहा है।
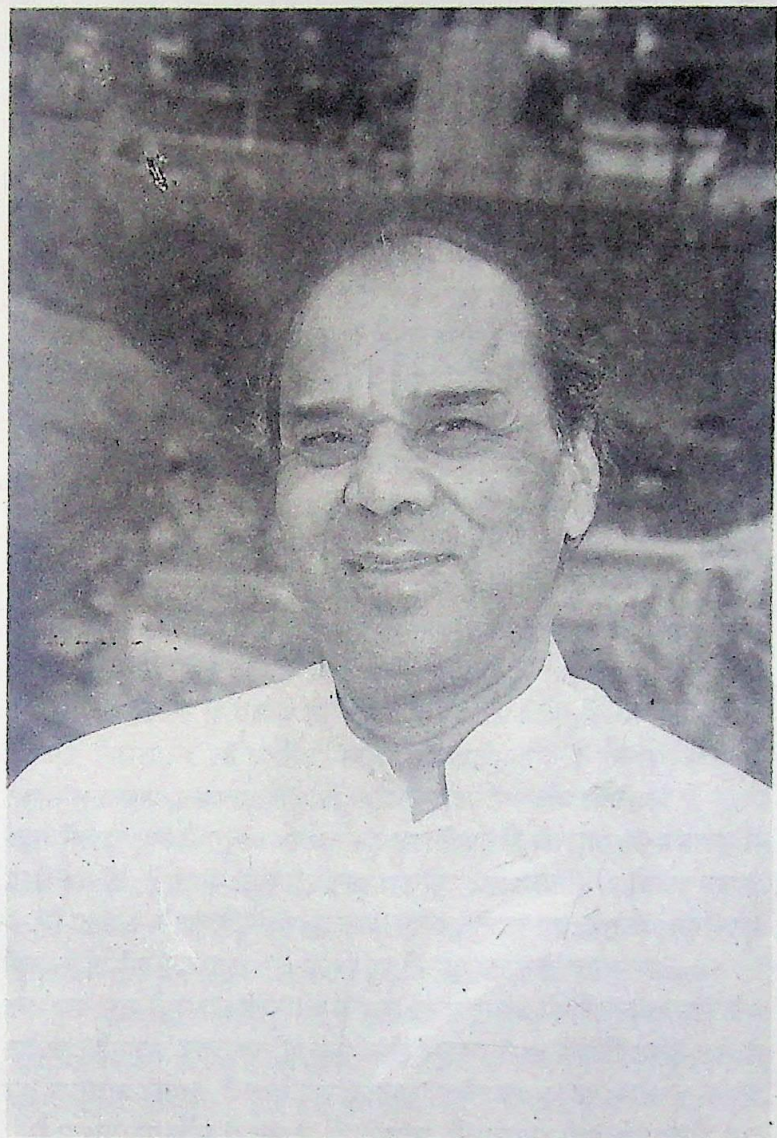
पूज्य गुरुदेव

डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली

भूमिका

हजारों वर्षों की आयु प्राप्त योगियों, ऋषियों, मुनियों ने, समस्त उपनिषदों ने एक स्वर से स्वीकार किया है, कि साधना के बिना जीवन अधूरा है, साधना के बिना जीवन अपूर्ण है और जब तक साधना सम्पन्न नहीं हो जाती, तब तक जीवन में उच्चता, श्रेष्ठता, दिव्यता और पवित्रता नहीं आ पाती, क्योंकि व्यक्ति मात्र परिश्रम के द्वारा श्रेष्ठत्व, उच्चता नहीं प्राप्त कर पाता और केवल बुद्धि बल से ही या केवल बाहु बल से ही सर्वोच्च शिखर पर नहीं पहुंच पाता। कोई भी व्यक्ति जब साधक बनता है, तब वह गुरु की शरण में जाता है, तब गुरु उसे रास्ता बताते हैं, कि तुम्हारे जीवन की प्रकृति के अनुकूल कौन सी साधना है और फिर वह उस साधना को सम्पन्न कर सर्वोच्च पद पर पहुंच सकता है, दरिद्रता से ऊपर उठ कर करोड़पति बन सकता है, अपने शरीर के रोगों को मिटा कर पूर्ण स्वस्थ हो सकता है, पूर्ण यश और सम्मान प्राप्त कर सकता है और अकाल मृत्यु योग को दूर कर पूर्ण आयु प्राप्त कर सकता है।

साधना के द्वारा धन, मान, पद, प्रतिष्ठा, भोग, विलास आदि सब कुछ प्राप्त कर सकता है, आध्यात्मिक क्षेत्र में भी वह कुण्डलिनी जागरण, दिव्य दर्शन, ब्रह्माण्ड भेदन, वायु गमन, अष्ट सिद्धियां, नौ निधियां, सोलह कलाएं, इन सब विधाओं में पारंगत हो कर वह जीवन के उन आयामों को भी स्पर्श कर सकता है, जो अद्वितीय हैं, श्रेष्ठ हैं, दिव्य हैं।

जब तक जीवन में साधना का प्रवेश नहीं हो जाता, जब तक जीवन में गुरु की स्थापना नहीं हो जाती, तब तक जीवन अधूरा है और गुरु से स्पर्श पा कर, उनसे दीक्षा प्राप्त कर व्यक्ति साधनाएं सम्पन्न करता है, तो वह सिद्ध पुरुष बन जाता है, वह महापुरुष बन जाता है, वह प्रज्ञावान बन जाता है।

इस पुस्तक में साधनाओं की बारीकियों को, साधनाओं की जटिलताओं को और साधनाओं की आवश्यकता, महत्ता को भली प्रकार से समझाया गया है, इस दृष्टि से यह अपने आपमें प्रामाणिक पुस्तिका बन सकी है। प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह पुस्तक गीता, रामायण की तरह है, इसका अध्ययन कर वह जीवन की सभी समस्याओं, परेशानियों, दुःखों से मुक्ति पा सकता है।

मुझे विश्वास है, कि सुधि साधक इस पुस्तक से पूर्ण लाभ उठा सकेंगे।

—प्रकाशक

साधना क्या है

जीवन का प्रारम्भ मल-मूत्र भरी काया से होता है, शिशु को इस बात का भी ज्ञान नहीं होता, कि मल-मूत्र क्या है? पवित्रता क्या है? वह जन्म लेने के बाद मल-मूत्र में लिपटा पड़ा है, तो पड़ा है, जब तक कि उसकी मां उसे साफ कर अलग बिस्तर पर नहीं सुला दे। उसे इस बात को जानने की भी आवश्यकता नहीं होती, कि मैं कहां से आया हूं और कहां जाऊंगा? वह जब बड़ा होता है, तब उसके जीवन में कमाने का, भोग करने का, संतान पैदा करने का बीज बो दिया जाता है और यह बीज आगे चल कर व्यक्ति को अभाव, दु:ख, परेशानियां, बाधाएं, अड़चनें, कठिनाइयां, समस्याएं प्रदान करता है।

क्या यह सौभाग्य है?

नहीं। तो फिर इन बाधाओं और समस्याओं को किस प्रकार से दूर किया जाए?

विधाता ने जो कुछ लिखा है, उसे बदल देने की, परिवर्तित कर देने की प्रक्रिया 'साधना' है। हो सकता है, कि विधाता ने आपके जीवन में दरिद्रता लिखी हो, अभाव लिखा हो और आपके पास ऐसी कोई कुञ्जी नहीं है, कोई विज्ञान नहीं है, जो इस समस्या का समाधान कर सके; कोई रास्ता नहीं है, जिसके माध्यम से आप चल कर सफलता पा सकें और आपका पूरा जीवन हताशा, निराशा, दु:ख, दारिद्र्य, कष्ट, पीड़ा, अभाव और चिन्ताओं में बीत जाता है। आपको कोई रास्ता नहीं दिखाई देता, कि इन समस्याओं के पहाड़ को मैं कैसे दूर करूं? एक चिन्ता को आप हटाते हैं, तो दूसरी सौ चिन्ताएं आ कर घेर लेती हैं, एक परेशानी को धकेलते हैं, तो दूसरी सौ परेशानियां आपके सामने उत्पन्न हो जाती हैं और उनसे जूझते-जूझते आप समाप्त हो जाते हैं और एक दिन दस मन लकड़ियों पर लेट कर राख में परिवर्तित हो जाते हैं।

क्या यह जीवन है? क्या इसी के लिए हमने जन्म लिया था? क्या यही जीवन का उद्देश्य है, लक्ष्य है? क्या हम भाग्य का रोना रोते हुए जीवन भर अभावग्रस्त रहेंगे? क्या हम सम्पन्नता नहीं प्राप्त कर सकेंगे? क्या अपने व्यक्तित्व को अद्वितीय नहीं बना सकेंगे?

कायर और बुजदिल व्यक्ति अपने जीवन में कुछ नहीं कर सकता,

वह केवल भगवान को कोस सकता है, अपने भाग्य को कोस सकता है। परन्तु जो समझदार हैं, जो चेतना युक्त हैं, वे इस प्रकार से अभावग्रस्त नहीं होते, तनाव युक्त नहीं होते, अपितु गुरु के बताये हुए साधना पथ पर अग्रसर हो कर उन समस्त अभावों, बाधाओं और परेशानियों को दूर कर लेते हैं, जो उसके जीवन में हैं, जिनकी वजह से उसकी उन्नति रुकी हुई है, जिनकी वजह से उसकी प्रगति नहीं हो पा रही है, जिनकी वजह से उसके जीवन में निराशा घर कर गई है। इसलिए साधना अपने आप में विष से अमृत की ओर बढ़ाने की प्रक्रिया है, अन्धकार से प्रकाश की ओर जाने की क्रिया है, बूंद से समुद्र बनने की क्रिया है, एक खाकसार जर्रे को आसमान बना देने की क्रिया है।

साधना के माध्यम से हम प्रत्येक वह वस्तु प्राप्त कर सकते हैं, जो हमारे ज़ीवन में आवश्यक है, जिसको हम प्राप्त करना चाहते हैं, क्योंकि साधना ही एकमात्र वह रास्ता है, जिसे हमारे पूर्वजों ने स्वीकार किया है, प्राप्त किया है, चाहे वशिष्ठ हों, गर्ग हों, अत्रि हों, कणाद हों, चाहे पुलस्त्य हों, चाहे कोई अन्य ऋषि हों। वे ऋषि हमसे ज्यादा सम्पन्न थे, हमसे ज्यादा स्वस्थ थे, वे गृहस्थ थे, उनकी पत्नी थी, पुत्र थे, बन्धु-बान्धव थे और इतना होने के बावजूद उनके घर में स्वर्ण वर्षा होती रहती थी, धन का अभाव नहीं था, कोई रोग उनको घेरे हुए नहीं था और वे जीवन में इतनी ऊंचाई पर उठे, कि आज भी हम उनको स्मरण कर धन्य हो जाते हैं।

उनके पास क्या था? किस युक्ति से, किस तरीके से वे अमृतमय बन सके? किस प्रकार से उनकी आंखों में चमक आ सकी?

उन्होंने प्रकृति का अध्ययन कर यह निष्कर्ष निकाला, कि केवल साधना ही वह अमोध शस्त्र है, जिसके माध्यम से दुर्भाग्य पर प्रहार किया जा सकता है, भाग्यहीनता को नष्ट किया जा सकता है, अभाव और समस्याओं पर चोट दी जा सकती है और संघर्ष कर सफलता पाई जा सकती है।

मनुष्य तब तक उन्नति नहीं प्राप्त कर सकता, जब तक कि उसके पास दैवीय बल नहीं हो, चाहे आपके पास धन-बल हो, चाहे आपके पास बाहु-बल हो, मगर धन-बल और बाहु-बल आपके जीवन के एक सीमित क्षेत्र को ही प्रभावित कर सकते हैं, सम्पूर्ण जीवन को अद्वितीय नहीं बना

सकते, क्योंकि आपका जीवन विविध आयामों से घिरा हुआ है और इन सब आयामों को सम्पन्न कर देने के लिए दैवीय बल की नितान्त अनिवार्यता है।

इसके लिए यह जरूरी नहीं है, कि आप संन्यासी बन जायें, लंगोट पहिन कर जंगल में घूमने के लिए निकल जायें, अपने दैनिक कार्य, नौकरी या व्यापार को छोड़ कर केवल ईश्वर के ध्यान में डूब जायें, भगवे कपड़े पहिन लें; इसके लिए जरूरी है मन संकल्प शक्ति, दृढ़ता और सद्गुरु की प्राप्ति।

जब जीवन में सद्गुरु की प्राप्ति हो जाती है, तब व्यक्ति की सारी चिन्ताएं समाप्त हो जाती हैं, क्योंकि वह अपने जीवन को, अपने सर्वस्व को गुरु चरणों में समर्पित कर देता है और गुरु उसे उस साधना का ज्ञान देते हैं, जो उसके जीवन में आवश्यक है। यदि धन की कमी है तो '**आकस्मिक धन प्राप्ति साधना**' देंगे; यदि शरीर रुग्ण है, तो '**धनवन्तरी साधना**' देंगे; यदि उसकी अन्य कोई अनिवार्यता है, तो '**कुबेर साधना**', '**महाविद्या साधना**', '**सर्वोच्च उपलब्धि साधना**' आदि प्रदान करेंगे।

इसलिए चाहे कितनी ही दीक्षाएं प्राप्त की हों, चाहे पत्नी, पुत्र, बान्धव हों, चाहे नोटों के अम्बार लगे हों, परन्तु बिना साधना के जीवन तनाव रहित नहीं बन सकता, चेहरे पर आभा नहीं आ सकती, एक लपक नहीं बन सकती, जिससे सामने वाला प्रभावित हो जाए और इसके लिए एक मात्र सहारा, जो हमारे शास्त्रों ने स्पष्ट किया है, वह साधना ही है और साधनाओं के द्वारा ही जीवन में प्रत्येक दृष्टि से परिपूर्णता लाई जा सकती है।

क्या प्रत्येक व्यक्ति साधना सम्पन्न कर सकता है?

साधना जीवन के अधूरेपन को पूरा कर देने की प्रक्रिया है, साधना जीवन के अभावों को दूर कर देने का माध्यम है। यदि मानव शरीर का विश्लेषण करें, तो उसमें नाड़ियां, मांस, थूक, मज्जा, लार, विष्ठा, मूत्र आदि के अलावा कुछ नहीं है, उस शरीर को अद्वितीय बना देना साधना के माध्यम से ही सम्भव है और इसके लिए कोई जाति, कोई वर्ण आड़े नहीं आता। कोई भी व्यक्ति, चाहे वह किसी भी जाति का हो, किसी भी धर्म को मानने वाला हो, यदि गुरु को प्राप्त कर लेता है, तो गुरु के बताये हुए रास्ते पर चल कर, उनकी बतायी साधना को सम्पन्न कर जीवन में सफलता प्राप्त कर सकता है।

आपको यह ज्ञात नहीं है, आपको कौन सी साधना सम्पन्न करनी चाहिए, कौन सी साधना आपके लिए अनुकूल है, किस साधना से आपके जीवन में परिपूर्णता आ सकती है? ब्लड प्रेशर को नियन्त्रित करने वाली लगभग सौ तरह की दवाइयां हैं, परन्तु प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्रत्येक दवाई अनुकूल नहीं होती, शरीर की संरचना के अनुसार ही डॉक्टर उसे दवाई देते हैं, जिससे कि उसका ब्लड प्रेशर नियन्त्रित रह सके। ठीक उसी प्रकार गुरु ही यह बता सकता है, कि व्यक्ति के जीवन के लिए किस प्रकार की साधना आवश्यक है?

मगर गुरु वह हों, जो अपने आप में पूर्ण संस्कार युक्त हों, दिव्य हों, उच्च हों, अद्वितीय हों, श्रेष्ठ हों, जो साधनाओं में पारंगत हों, जिसके पास तपस्या का बल हो, जो शिष्य को अपना आत्म समझें, अपना प्राण समझें, जो उसके रक्त को सजीव बना दें और उसके सारे शरीर को दिव्य और चेतनावान बना दें। गुरु को प्राप्त करके ही व्यक्ति साधना पथ पर अग्रसर हो सकता है।

धूर्त, छल कपट युक्त गुरु, जिन्होंने बड़ी-बड़ी दाढ़ियां रख रखी हैं, जिन्होंने बड़े-बड़े बाल रख रखे हैं, जिनका चेहरा तेल से चमक रहा है, जो भगवे कपड़े या दूसरे प्रकार के कपड़े पहिन कर सामने वाले को प्रभावित करते हैं, ऐसे मुट्ठी भर व्यक्ति और अधिक बाधाएं, और अधिक समस्याएं, और अधिक अड़चनें ही पैदा करते हैं, क्योंकि कबीर ने कहा है –

जा का गुरु अंधला, चेला खरा निरन्ध।
अन्धे अन्धा ठेलिया, दोन्यूं कूप पड़न्त।।

एक अन्धा दूसरे अन्धे व्यक्ति को रास्ता नहीं दिखा सकता, एक लालची गुरु अपने शिष्य को दिव्यता नहीं दे सकता, एक अज्ञानी गुरु शिष्य को ज्ञान नहीं दे सकता, जो तपस्या से रहित है, वह शिष्य को यह नहीं समझा सकता, किस प्रकार की साधना तुम्हारे लिए अनुकूल है।

गुरु का कर्त्तव्य है, कि वह शिष्य को उसके जीवन के मूल लक्ष्य के बारे में बताये, केवल बताये ही नहीं, उसके पास बैठ कर उसे साधना दे, उसका मंत्र बताये, उसको करने की प्रक्रिया समझाये और उसे सफलता प्रदान करे।

जिसके जीवन में ऐसे सद्गुरु प्राप्त हो जाते हैं, उसका जीवन धन्य हो उठता है, वह मल-मूत्र भरी काया से ऊपर उठ कर चेतना युक्त बन सकता है,

उसके शरीर से सुगन्ध प्रवाहित हो सकती है, वह युगपुरुष बन सकता है, महापुरुष बन सकता है, दिव्य पुरुष बन सकता है। मगर यह सब होता है साधनाओं के द्वारा ही और साधनाओं के माध्यम से सम्पूर्ण जीवन दीपावली की तरह जगमगा उठता है।

केवल हाथ में माला ले कर मंत्र जप करने को साधना नहीं कहते, केवल पालथी मार कर आंखें बंद कर लेने को भी साधना नहीं कहते, केवल उपकरणों के माध्यम से ही साधना नहीं हो सकती, क्योंकि कमजोर, दुर्बल व्यक्ति के हाथों में तलवार शोभा नहीं देती, तलवार उसे शोभा देती है, जिसके हाथ बलिष्ठ हों, जिसमें एक आत्मबल हो, जो प्रहार करने की क्षमता रखता हो, ऐसे व्यक्ति के हाथ में तलवार एक अमोघ अस्त्र बन जाता है।

ठीक इसी प्रकार से जिसके जीवन में गुरु हैं और साधना का बल है, वह जीवन में कहीं पर भी न्यूनता युक्त नहीं रहता, ऐसा व्यक्ति जीवन में वह सब कुछ प्राप्त कर लेता है, जिसकी उसके जीवन में अनिवार्यता होती है।

इसलिए यह तो स्पष्ट है , कि –

साधनाहीन नरः सदैव दुःखं,
चिन्ता मतान्ध मृत्यु सदा परेवं।
धन्योपि वै नर सद्‌गुरु युक्त श्रेष्ठं;
पूर्णत्व प्राप्त यो मेव न संशयः।।

जीवन तो अभावों, परेशानियों और समस्याओं से भरा हुआ है, जब भी आप एक कदम चलते हैं, तो सौ शत्रु पैदा हो जाते हैं, जब भी किसी विशेष कार्य को करने के लिए उद्यत होते हैं, तो परिवार वाले ही आपके शत्रु बन जाते हैं, आस-पड़ोस के व्यक्ति ही आपको पिंजरे में कैद करने की कोशिश करते हैं, मगर जो शेर होते हैं, वे इन जंजीरों को, इन बन्धनों को तोड़ देते हैं, तन कर खड़े हो जाते हैं और साधनाओं में सफलता पा लेते हैं। इसके लिए जरूरत है संकल्प शक्ति की, दृढ़ता की, आकांक्षा की, आगे बढ़ने की भावना की और आसमान को मुट्ठी में कैद करने के हौसले की।

यदि जीवन में साधना नहीं है, तो जीवन अपने आप में व्यर्थ है, एक हाड़-मांस का ढांचा मात्र है, ऐसा जीवन मुट्ठी भर राख के अलावा कुछ नहीं

बन सकता, ऐसा जीवन हमेशा अतृप्त रहता है, हमेशा चिन्ताओं और परेशानियों से घिरा रहता है, निरन्तर मृत्यु की ओर अग्रसर होता रहता है।

साधना के लिए कोई विशेष आयु नहीं होती, साधना के लिए कोई विशेष समय नहीं होता, अपितु जब भी गुरु की आज्ञा हो, वह जिस रास्ते पर चलने की आज्ञा दे, उस रास्ते पर शीघ्रता से चल पड़ना चाहिए और जो व्यक्ति ऐसा कर देता है, वही सफलता प्राप्त कर लेता है, वही दैवीय बल प्राप्त कर लेता है, वही युगपुरुष बनने की ओर अग्रसर हो जाता है।

जो भी जीवन में अद्वितीय बने वे साधनाओं के द्वारा ही उच्चकोटि के बन सके, चाहे राम हों, जिन्होंने विश्वामित्र के आश्रम मे रह कर साधनाओं के उच्चतर सोपान को स्पर्श किया; चाहे कृष्ण हों, जिन्होंने सांदीपन के आश्रम में रह कर शिक्षा-साधना प्राप्त की; चाहे बुद्ध हों, चाहे महावीर हों, चाहे वशिष्ठ, विश्वामित्र, अत्रि, कणाद, पुलस्त्य हों। इन सबने साधनाओं के द्वारा ही जीवन को पूर्णता प्रदान की है और इसीलिए आज के युग में भी यह अनिवार्य सत्य है, कि साधनाओं के द्वारा हम वह सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं, जो हमारे जीवन में नहीं है। साधना पथ पर अग्रसर होने वाला व्यक्ति अपने जीवन में भौतिकता को भी पूर्णता के साथ प्राप्त कर लेता है और आध्यात्मिकता को भी पूर्णता के साथ आत्मसात् कर लेता है। उसके जीवन में फिर न भौतिक वस्तुओं की न्यूनता रहती है और न ही आध्यात्मिक अपूर्णता। वह दोनों का समन्वय करता हुआ आगे बढ़ता है और इन्द्र के समान सुख भोगता हुआ उस सिद्धाश्रम में चला जाता है, जहां हजारों-हजारों वर्षों की आयु प्राप्त योगी, यति, संन्यासी हैं, जहां की माटी भी अपने आप में कुंकुम और चन्दन के समान पवित्र है, जहां रोग, मृत्यु आदि नहीं हैं और जिसको प्राप्त करना ही जीवन की परिपूर्णता है। यह सब कुछ प्राप्त हो सकता है साधनाओं के माध्यम से।

साधनाओं के प्रकार

साधनाएं तो सैकड़ों-हजारों प्रकार की हैं, जो हमारे ऋषियों-मुनियों द्वारा प्रदत्त हैं। उन्होंने इन्हें प्रदान किया है अपने आत्म बल से। पहले उन्होंने स्वयं उन मंत्रों को परखा है और जब पाया है, कि ये मंत्र वास्तव में उपयोगी हैं, लाभप्रद हैं, तो उन्हें आने वाली पीढ़ियों को प्रदान किया है। इसलिए ये

साधनाएं उनके जीवन का निचोड़ हैं, अनुभवगम्य हैं, हमारे शास्त्रों का आधारभूत सत्य हैं, ऋषि-मुनियों का हमारे लिए आशीर्वाद हैं, जिनके माध्यम से हम कम समय में ही सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

यदि व्यक्ति साधना नहीं करता है, तो उसका जीवन अपने आप में कच्ची मिट्टी के समान होता है, जो पैरों की ठोकर खाती रहती है। ऐसे व्यक्ति जीवन में सदैव अभावग्रस्त रहते हैं, चिन्ताएं उनके सामने पैदा होती रहती हैं और उनके साथ ही मरती हैं, अड़चनों से वे घबराते रहते हैं, बाधाएं उन पर बराबर प्रहार करती रहती हैं; और वे जीवन में कुछ भी नहीं कर सकते, जैसे पैदा होते हैं, वैसे ही मर जाते हैं और यह उनके जीवन की बहुत बड़ी न्यूनता है, कमी है, इस कमी को दूर साधनाओं के माध्यम से ही किया जा सकता है।

साधनाएं ऐसी हों, जो व्यक्ति के भौतिक पक्ष को पूर्णता प्रदान करती हों और उसके आध्यात्मिक पक्ष को भी पूर्णता प्रदान करें। वह महालक्ष्मी की साधना करे, तो कुण्डलिनी जागरण की भी साधना करे, वह सम्मोहन साधना करे, तो ब्रह्माण्ड साधना भी सम्पन्न करे। इस प्रकार से भौतिक और आध्यात्मिक दोनों पक्षों की साधना सम्पन्न कर '**श्रीसुन्दरी सेवन तत्पराणां भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव**' वह भोग और मोक्ष दोनों प्राप्त कर लेता है और ऐसा व्यक्ति सही अर्थों में धीर, गम्भीर, चेतना युक्त, संस्कार युक्त, अद्वितीय बन सकता है।

साधनाओं से लाभ

व्यक्ति चाहे उच्च, कुलीन या अच्छे घराने में जन्म लिया हुआ हो या चाहे झुग्गी-झोपड़ी में पैदा हुआ हो, वह साधनाओं के बिना अपने जीवन में कुछ भी नहीं कर सकता। यदि वह करोड़पति के घर में जन्म लेता है, तब भी बीमार हो सकता है, रुग्ण शरीर वाला हो सकता है, तत्परक चिन्ताएं उसको बांधती रहती हैं, तनाव उसके जीवन का अंग बन जाते हैं और ऐसे व्यक्ति असमय में ही काल कवलित हो जाते हैं, मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं।

क्या ऐसा जीवन उचित है? क्या ऐसे जीवन का कोई मूल्य है? क्या ऐसे जीवन से पूर्णता आ सकती है? क्या ऐसे जीवन से आनन्द की उपलब्धि हो सकती है? क्या ऐसें जीवन से अमृत वर्षा हो सकती है?

नहीं, कदापि नहीं। यह तो तब सम्भव हो सकता है, जब व्यक्ति

साधनाएं सम्पन्न करे, वह साधनाओं में संलग्न हो, साधना पथ पर अग्रसर हो।

कोई भी व्यक्ति, किसी भी जाति का, किसी भी वर्ण का, किसी भी रंग का, किसी भी उम्र का हो, वह साधनाएं सम्पन्न कर सकता है। ये सब साधनाओं के मार्ग में बाधक नहीं बनते। चाहे आपने हजार दीक्षाएं ले ली हों, मगर जब तक आप साधनाएं सम्पन्न नहीं करते, तब तक आप जीवन में पूर्णता, दिव्यता नहीं प्राप्त कर सकते। अपने हाथ का बना हुआ भोजन ज्यादा रुचिकर और स्वादिष्ट होता है, होटल के बने-बनाये भोजन की अपेक्षा। साधना अपने हाथों से बनाई हुई दिव्य औषधि है, और बाकी सारे कार्य ठीक वैसे ही हैं, जैसे हम होटलों में खाना खा कर अपने आपको संतुष्ट समझ लेतें हैं।

इसलिए जीवन में आत्म बल, दिव्य बल, चेतना बल तभी प्राप्त हो सकता है, जब आप साधना में प्रवृत्त होते हैं और जब आप साधना के मार्ग पर अग्रसर हो जाते हैं, तब आपके जीवन के रास्ते अपने आप खुलते रहते हैं, जीवन की न्यूनताएं अपने आप दूर होती रहती हैं, जीवन के अभाव अपने आप नष्ट होते रहते हैं, जीवन की बाधाएं अपने आप नष्ट होती रहती हैं।

इसलिए जीवन की उपलब्धि साधना है, जीवन की अनिवार्यता साधना है, जीवन की परिपूर्णता साधना है, जीवन को तेजस्विता प्रदान करने की क्रिया साधना है।

साधना कोई भी स्त्री कर सकती है, साधना कोई भी बालक कर सकता है और हमारा इतिहास इसका प्रमाण है। चाहे वह पांच साल का प्रह्लाद हो, चाहे वह सौ साल का च्यवन ऋषि हों, चाहे अरुन्धती हो, चाहे कृष्ण हों, चाहे राम हों, चाहे हनुमान हों, साधनाओं के द्वारा ही इन सबने वह अद्वितीयता प्राप्त की, जिसके माध्यम से वे युगपुरुष बन सके और जिनका नाम आज भी हमारे होठों के ऊपर खुदा है। इस प्रकार साधनाएं सम्पन्न कर व्यक्ति जीवन में उन युगपुरुषों की श्रेणी में बैठ जाता है, जिनका नाम ले कर हम पवित्र बन जाते हैं, दिव्य बन जाते हैं, क्योंकि आप में और राम में कोई अन्तर नहीं है, आप में और कृष्ण में कोई अन्तर नहीं है, आप में और बुद्ध-महावीर में भी कोई अन्तर नहीं है, अन्तर है आपके आत्म बल में, आपके दृढ़ निश्चय में। आप भी आगे बढ़ कर उन युगपुरुषों की श्रेणी में खड़े हो सकते हैं, जो अपने

आप में परिपूर्ण हैं और इसलिए सम्पूर्ण जीवन की चेतना साधना ही है और साधना के द्वारा ही व्यक्ति जीवन में अद्वितीयता प्राप्त कर सकता है।

जो ऊंचा उठना चाहते हैं, जो वास्तव में कुछ बनना चाहते हैं, वे रुपयों-पैसों की चिन्ता नहीं करते, कागज के नोट जेबों में नहीं ठूंसते, सिक्कों की खनखनाहट से विचलित नहीं होते, उनके लिए तो ये सब घास-फूस के बराबर हैं, हाथ का मैल हैं, इनका वे त्याग कर देते हैं और सब त्याग करके अपने गुरु के सामने कोरे कागज की तरह खड़े हो जाते हैं, कि अब आप इस पर कुछ भी लिख सकते हैं, वह लिखें जो स्वर्णिम हो, वह लिखें जो अद्वितीय हो, वे साधनाएं मुझे दें, जिनके माध्यम से मैं संकटों और बाधाओं पर विजय प्राप्त करता हुआ सम्पूर्णता का आनन्द प्राप्त कर सकूं, जो हमारे ऋषियों, यतियों, योगियों, मुनियों, संन्यासियों और पूर्वजों को थीं। यही हमारे जीवन का आधार है, यही हमारे जीवन का सेतु है, यही हमारे जीवन का लक्ष्य है और इस लक्ष्य की ओर निरन्तर अग्रसर होने की क्रिया साधना ही है।

साधनाओं से सम्बन्धित सामग्री

कोई भी युद्ध बिना अस्त्र-शस्त्रों के नहीं लड़ा जा सकता, वह चाहे शत्रु पर प्रहार करने की बात हो या चाहे अड़चनों पर विजय प्राप्त करने की क्रिया हो। शत्रुओं पर प्रहार करने के लिए शास्त्रों में **'बगलामुखी साधना'** या **'धूमावती साधना'** दी है, वहीं समस्त ऐश्वर्य प्राप्त कर लेने के लिए **'महालक्ष्मी साधना'** या **'कुबेर साधना'** का भी विधान है।

परन्तु इसके लिए यह जरूरी है, कि उससे सम्बन्धित सामग्री हो। इस बात का ध्यान रखना चाहिए, कि वह सामग्री बाजारू नहीं हो। रुई अपने आप में पहिनी नहीं जाती, रुई से धागा और धागे से कपड़ा बनाया जाता है, तब वह पहिनने के योग्य होता है। लोहे का टुकड़ा अपने आप में तलवार का काम नहीं दे सकता, उसको धार दे कर ही तलवार बनाई जा सकती है, जो शत्रुओं पर वज्र की तरह गिरती है। ठीक इसी प्रकार से जो भी सामग्री हो, वह अपने आप में मंत्र सिद्ध हो, चेतना युक्त हो, संस्कार युक्त हो, प्राणश्चेतना और दिव्यता से ओत-प्रोत हो और जो साधना की जाए, उस देवता के माध्यम से वह संस्कारित हो।

इसलिए बाजारू सामग्री से कुछ भी फल प्राप्त नहीं हो सकता और व्यर्थ में समय की बर्बादी होती है। साधना हेतु जो भी सामग्री प्रयुक्त हो, वह अपने आप में पवित्र और दिव्य हो। ऐसी सामग्री का प्राप्त होना ही अपने आप में कठिन होता है। परन्तु साधक को चाहिए, कि वह ऐसी ही सामग्री प्राप्त करे, चाहे उसका मूल्य कुछ ज्यादा देना पड़े, क्योंकि स्वार्थ और साधना का समन्वय नहीं हो सकता, समन्वय होता है त्याग का साधना से। जब आप धन का त्याग करते हैं, तब आप साधना से सम्बन्धित श्रेष्ठ उपकरण प्राप्त कर सकते हैं।

इसलिए यह आवश्यक है, कि साधना से सम्बन्धित जो भी उपकरण हों, वह चाहे माला हो, चाहे यंत्र हो, चाहे आसन हो, चाहे अन्य कोई चीज हो, वह अपने अपमें संस्कारित हो, मंत्र सिद्ध हो और प्राणश्चेतना युक्त हो।

यंत्र को अगर भौतिकता की दृष्टि से देखा जाए, तो वह मात्र तांबे का टुकड़ा है, जिस पर मात्र कुछ लकीरें बनी हुई हैं। मगर ये लकीरें ही अपने आप में उस तांबे के टुकड़े को सोने के टुकड़े से ज्यादा मूल्यवान बना देती हैं, क्योंकि इसकी प्रत्येक लकीर, इसका प्रत्येक बीज अक्षर अपने आप में संस्कारित होता है, चेतना युक्त होता है, उस पर मंत्र सिद्धि क्रिया सम्पन्न की हुई होती है, तभी वह तांबे का टुकड़ा सोने से ज्यादा बहुमूल्य हो कर साधक के पास पहुंचता हैं उसका मूल्य रुपयों से नहीं आंका जा सकता, हीरों से भी नहीं आंका जा सकता, वह तो जितना उसके ऊपर तपस्या का अंश व्यय किया हुआ होता है, उतना ही मूल्यवान होता है।

जिसके पास श्रेष्ठतम यंत्र होते हैं, पवित्र मालाएं होती हैं, श्रेष्ठ आसन होते हैं, वे साधना में सफलता प्राप्त कर पाते हैं। इसलिए सामग्री का चयन करते समय ध्यान रखने की जरूरत है, क्योंकि सामग्री में कुंकुम, अक्षत पुष्प, यंत्र, चित्र, माला और अन्य कई तत्त्व हैं, जो गुरु ही बता सकता है, किस प्रकार की साधना में किस प्रकार के उपकरणों की आवश्यकता है? किस प्रकार की साधना में कौन सी माला उपयोग में ली जानी चाहिए? किस प्रकार की साधना में कौन से यंत्र का उपयोग किया जा सकता है?

और ऐसा करके की व्यक्ति साधना मे सफलता प्राप्त कर सकता है। जो ऐसा नहीं कर सकता, वह किसी भी हालत में साधना में सफलता नहीं

प्राप्त कर सकता, चाहे वह दस लाख मंत्र जप कर ले, चाहे बीस साल लगा दे, क्योंकि आधारभूत सत्य सामग्री है और उस सामग्री के माध्यम से ही साधना में सफलता प्राप्त कर उस लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है, जो जीवन का आधार होता है, जो जीवन का सेतु होता है।

जीवन में पूर्णता के लिए साधना अनिवार्य है

वास्तव में ही जीवन वही है, जो पूर्ण हो, जो आभा युक्त हो, जो सूर्य की तरह दिव्य हो, तेजस्वी हो, चन्द्रमा की तरह शीतल हो और इस प्रकार का जीवन ही वास्तविक जीवन कहा जा सकता है, क्योंकि जीवन के कई रंग होते हैं, उन सारे रंगों को साधना के माध्यम से ही प्राप्त किया जा सकता है। व्यक्ति साधना के माध्यम से धन का अम्बार लगा सकता है, रोग मुक्त हो सकता है और किसी को भी रोग मुक्त कर सकता है, अपने ऋण को चुका सकता है, पदोन्नति प्राप्त कर सकता है, व्यापार में वृद्धि कर सकता है, कुण्डलिनी जाग्रत कर चेतना युक्त बन सकता है, समाधि की अवस्था में पहुंच सकता है, तनाव रहित बन सकता है और वह अपने जीवन में परिपूर्णता ला सकता है।

जिसने जीवन में साधना नहीं की, उसका जीवन एक प्रकार से व्यर्थ है, क्योंकि गुरु धारण करना, गुरु में लीन होना, गुरु से एकाकार हो जाना, गुरु चित्र में प्रत्यक्ष उनके दर्शन करना साधना का प्रथम सोपान है। द्वितीय सोपान में गुरु द्वारा प्रदत्त सामग्री का उपयोग करना, उसके बारे में समझना, कि कौन सी दिशा उचित है, किस प्रकार का आसन जरूरी है, किस प्रकार का वस्त्र अनिवार्य है, मंत्र का उच्चारण क्या है – यह सब गुरु के द्वारा ही समझा जा सकता है और जो ऐसा समझ कर साधना में बैठता है, वह जल्दी से जल्दी सफलता प्राप्त कर लेता है।

प्रत्येक साधना में एक निश्चित संख्या में मंत्र जप करना अनिवार्य है, दिनों की संख्या भी निश्चित होनी चाहिए। यह गुरु ही बता सकता है, कि किस साधना में रोज कितना मंत्र जप करें, कितने दिनों तक मंत्र जप करें और किन नियमों का पालन करें। ऐसा व्यक्ति, जो नियमों का पूर्णता के साथ पालन कर सकता है, वह निश्चय ही साधना में सफलता प्राप्त कर सकता है।

धन्यास्तु वै नर साधनास्तु,
देवत्व रूपं परिपूर्णमायां।
सर्वोच्च श्रेष्ठं दिव्य तेजस्वितायां;
साधना युक्त जीवन धन्यस्त एव।।

वही जीवन धन्य है, जो साधना युक्त है। आपने चाहे हजारों दीक्षाएं प्राप्त कर ली हों, हजार बार गंगा का स्नान कर लिया हो, हजार बार देवताओं के चित्रों पर कुंकुंम, अक्षत, पुष्प आदि समर्पित किया हो, मगर उससे पूर्णता नहीं आ सकती। पूजा अलग चीज है, साधना अलग चीज है, जो साधनाएं सम्पन्न करता है, वह सभी प्रकार से परिपूर्णता प्राप्त करता हुआ धन्य हो सकता है।

इसीलिए शास्त्रों में कहा गया है, कि हजार काम छोड़ कर भी साधना में प्रवृत्त होना चाहिए। सांस लेने से भी ज्यादा उपयोगी साधना है, जीवित रहने से भी ज्यादा आवश्यक साधना सम्पन्न करना है, क्योंकि परिपूर्णता प्राप्त करने की क्रिया साधना है, अभावों को ठोकर मार कर आगे बढ़ने की प्रक्रिया साधना है, आकाश को मुट्ठी में भींच लेने की युक्ति साधना है। जो पाताल को फोड़ सकता है, जो सूर्य को मुख में दबोच सकता है, जो आकाश को मुट्ठी में भींच सकता है, जो समुद्र के बीच से भी रास्ता निकाल सकता है, वही व्यक्ति सही अर्थों में साधक है और ऐसे साधक आप तभी बन सकते हैं, जब आप में दृढ़ संकल्प शक्ति हो, जब आपके पास जीवन्त, चैतन्य सद्गुरु हों और आपको मंत्रों पर विश्वास हो।

एक प्रकार से देखा जाए, तो साधना ऑक्सीजन की तरह आवश्यक है। जिस प्रकार हम बिना ऑक्सीजन के जीवित नहीं रह सकते, उसी प्रकार बिना साधना के भी जीवन अपने आप में बेमानी है, तुच्छ है, व्यर्थ है। जीवन को सभी दृष्टियों से परिपूर्णता प्रदान करने की क्रिया साधना ही है और प्रत्येक जाति, वर्ण, रंग और व्यक्ति के लिए साधना की अनिवार्यता को शास्त्रों ने स्वीकार किया है और यह हमारा सौभाग्य है, कि हमारे सामने शास्त्र हैं, यह हमारा सौभाग्य है, कि हमारे जीवन में गुरु हैं, यह हमारा सौभाग्य है, कि हम साधना में प्रवृत्त हो रहे हैं और ऐसा ही व्यक्ति युगपुरुष बन कर आने वाली पीढ़ियों के लिए आदर्श बन सकता है।

जीवन में सफलता प्राप्ति का सोपान — साधना

मनुष्य के जीवन में दो तत्त्व हैं, जिसमें पहला है गृहस्थ जीवन, जहां वह व्यापार, नौकरी, भाग-दौड़, छल, झूठ, पाखण्ड, व्यभिचार, असत्य आदि में लिप्त रहता है और इस आपाधापी में वह दुःखी, परेशान, चिन्तित, तनाव युक्त और विविध व्याधियों से ग्रस्त हो जाता है। उसका दूसरा पक्ष आध्यात्मिक पक्ष है, जो साधना से सम्बन्धित है। इसके माध्यम से वह देवताओं की साधना कर उन्हें अपने अनुकूल बना लेता है और जीवन में जो कुछ न्यूनता है, जो कुछ कमियां हैं, उन कमियों को दूर करके वह सब कुछ प्राप्त कर लेता है, जिससे उसका जीवन अमृतमय बन सके, चेतना युक्त बन सके, परिपूर्ण बन सके।

इन दोनों पक्षों की जीवन में नितान्त अनिवार्यता है। परन्तु आवश्यकता इस बात की है, कि इन दोनों में समन्वय हो, गृहस्थ जीवन भी सुचारु रूप से चल सके और आध्यात्मिक जीवन भी गतिशील हो सके, जहां हम तनाव मुक्त हो सकें, जहां हम कुण्डलिनी जागरण कर सकें, जहां हम ध्यान लगा सकें, धारणा के माध्यम से समाधि अवस्था को प्राप्त कर सकें और अपने सारे तनावों को, सारी व्याधियों को दूर कर एक अद्भुत, तेजस्वी व्यक्तित्व बन सकें। जन्म से कोई महापुरुष नहीं होता, सभी व्यक्ति एक सामान्य तरीके से ही जन्म लेते हैं, परन्तु जब गुरु की उस पर कृपा हो जाती है, तब गुरु उसे एक साधना क्रम समझाता है और उन साधनाओं को सम्पन्न कर वह सोलह कला प्रधान युगपुरुष, दिव्य पुरुष, चेतना पुरुष और अनिवर्चनीय व्यक्तित्व बन जाता है।

साधना केवल मंत्र जप करना नहीं है, केवल पूजा करना नहीं है, केवल गिड़गिड़ा कर प्रार्थना करना नहीं है, अपितु साधना का तात्पर्य है, कि वह आंख से आंख मिला कर उस देवता से मनोवाञ्छित सिद्धि, सफलता प्राप्त कर सके; लक्ष्मी को अपने आंगन में बिठा सके; कुबेर को अपने वश में कर स्वर्ण वर्षा सम्पन्न करा सके।

इस पुस्तक में साधनाओं की अनिवार्यता, साधनाओं के बारे में ज्ञान भरा हुआ है, एक छोटे कलेवर में पांच सौ पृष्ठों की सामग्री संयोजित की गई है, एक राजमार्ग बता दिया गया है, जिस पर चल कर साधक पूर्ण सफलता प्राप्त कर सके।

प्रत्येक साधक के लिए अनिवार्य और स्वर्णिम ग्रंथ – 'साधना'।